ये मेरे भारत का संविधान

मौहर सिंह
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान रूड़की

ये मेरे भारत का संविधान,
है हमको इस पर बहुत गुमान।।
मुसलमां, हिन्दू, सिक्ख समान,
मिला सब धर्मों को सम्मान।
न देता ऊंच नीच का ज्ञान,
है समता मूलक इसकी जान।
ये मेरे भारत का संविधान,
है हमको इस पर बहुत गुमान।।
मिटा दिये रजवाड़ों के राज,
लूटते जो निर्बलों की लाज।
पा सके हर कोई सम्मान,
न हो अब किसी जन का अपमान।
ये मेरे भारत का संविधान,
है हमको इस पर बहुत गुमान।।
दिया हमें बहुत बड़ा वरदान,
कर सके हर कोई मतदान।
गरीब हो चाहे यहां धनवान,
है मत की कीमत एक समान।
ये मेरे भारत का संविधान,
है हमको इस पर बहुत गुमान।।
राज की कुंजी प्रजा के पास,
लगाते नेता वोट की आस।
है इससे प्रजातंत्र जवान,
बन सके पी.एम. या प्रधान।
ये मेरे भारत का संविधान,
है हमको इस पर बहुत गुमान।।
किया सब कुरीतियों का नाश,
न होती लिंग भेद की बात।
बराबर बेटा–बेटी तात,
उड़ रहे गगन में साथ ही साथ।
ये मेरे भारत का संविधान,
है हमको इस पर बहुत गुमान।।
दिये हमें सब मौलिक अधिकार,
दिलाई कर्त्तव्यों की भी याद।
न हो अब लक्ष्मण रेखा पार,
सभी को कानून एक समान।
ये मेरे भारत का संविधान,
है हमको इस पर बहुत गुमान।।